

प्लैटगोम्फस बेनरटिरम

हाल ही में असम में खोजी गई ड्रैगनफ्लाई 'प्लैटगोम्फस बेनरटिरम' की एक नई प्रजातिका नाम पूर्वोत्तर में दो महिलाओं द्वारा किये गए अग्रणी कार्यों के लिये उनके नाम पर रखा गया है।

- इसका नाम नॉर्थ ईस्ट नेटवर्क (NEN) की संस्थापक सदस्य **मोनशा बहल** और ग्रीन हब की संस्थापक **रीता बनर्जी** के नाम पर रखा गया है।



मुख्य बटु :

- यह प्रजाति, जो एक एकल नर है, जून 2020 में असम में ब्रह्मपुत्र के तट के पास दो शोधकर्ताओं द्वारा खोजी गई थी।
- खोजा गया नर अपने चमकदार पंखों और पेट के आधार पर अलग (नया) प्रजातिका प्रतीत होता है।
- इसकी नीली आँखें हैं और गहरे भूरे रंग का चेहरा कनारों पर बालों से ढका हुआ है, जो ब्रह्मपुत्र के तट से लगभग 5-6 मीटर की दूरी पर एक बड़े पेड़ पर आराम करते हुए पाया गया था।
- इसका नविकास स्थान नदी तट के कनारे है जहाँ घास, वरिल पेड़, धान के खेत और दलदली भूमिका प्रभुत्व है, साथ ही कुछ वन पैच और वृक्षारोपण वाले क्षेत्र में भी है।
- ड्रैगनफ्लाईज़ और डेम्फ्लाईज़ कीड़ों के क्रम **ओडोनाटा** से संबंधित हैं।
 - ऑर्डर ओडोनाटा ("दाँतेदार") में कुछ सबसे प्राचीन और सुंदर कीड़े शामिल हैं जो कभी पृथ्वी पर पाए जाते थे, साथ ही कुछ सबसे बड़े उड़ने वाले अकशेरुकीय भी शामिल हैं।
 - ओडोनाटा में तीन समूह होते हैं: अनसिोप्टेरा (जिसमें ड्रैगनफ्लाई शामिल हैं), जीगोप्टेरा (जिसमें डेम्फ्लाईज़ शामिल हैं) और एनसिोजीगोप्टेरा (केवल दो जीवित प्रजातियों द्वारा दर्शाया गया एक अवशेष समूह)।

ड्रैगनफ्लाई:

- परचिय:
 - यह एक हवाई शिकारी कीट है जो दुनिया भर में मीठे पानी वाले क्षेत्रों के पास सबसे अधिक पाया जाता है।
 - इनके खास रंग इन्हें खूबसूरत बनाते हैं। जो उन्हें पारस्थितिकी और कला दोनों के लिये कीटों के व्यवहार पर शोध हेतु महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं।
- प्राकृतिक वास:

- ड्रैगनफ्लाई की अधिकांश प्रजातियाँ उष्णकटबिंध में और विशेष रूप से वर्षावनों में रहती हैं।
- महत्त्व:
 - ड्रैगनफ्लाईज़ क्षेत्र के पारस्थितिकि स्वास्थ्य के महत्त्वपूर्ण जैव-संकेतक के रूप में कार्य करते हैं। वे मच्छरों और अन्य कीड़ों को खाते हैं जो मलेरिया तथा डेंगू जैसी जानलेवा बीमारियों के वाहक हैं।
- खतरे:
 - उनके आवास का तेज़ी से वनाश उनके अस्तित्व के लिये एक सीधा खतरा बन गया है जिससे उनका संरक्षण ज़रूरी हो गया है।

स्रोत: हदुस्तान टाइम्स

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/platygomphus-benritarum>

